अभंग ६९

(राग: भूप, जोगी - ताल: त्रिताल)

चला प्रेमपुरासी जाऊं। मार्तंडाचें दर्शन घेऊं।।१।। तीर्थामाजीं करितां स्नान। होय पातक नाशन।।२।। मूळलिंगदर्शन घेतां। मिथ्या होय भवभयवार्ता।।३।। निघोनी जाय पाप कोटी। माणिक म्हणे घृतमारी भेटी।।४।।